

गोपता (von गोप) f. *Hirtenamt*: कर्षिष्ये कंसगोपताम् HARIV. 3302.
 गोपति (गो + पति) m. 1) Herr der Kuhheerde, Stier AK. 2, 9, 62. TRIK. 3, 3, 155. H. 1259. an. 3, 264. MED. t. 107. न भयं तस्य भूतेभ्यः सर्वेभ्यश्चैव भारत । नामतो विद्यते राजन्स्य कर्षणेषु गोपतिः ॥ MBH. 12, 4877. रत्नसो वशमापन्नं सिंहानामिव गोपतिम् R. 3, 51, 4. सिंहेन निरुक्तं गोष्ठे गोः स-
 वत्सेव गोपतिम् (वामुपासे) 4, 22, 31. VARĀH. BRH. S. 67, 115 (116). — 2) Herr der Heerden; Anführer, Herr überh.: यो घञ्जानो यो गवां गोपतिः RV. 4, 101, 4. 6, 45, 21. 7, 18, 4. 98, 6. 8, 14, 2. 21, 3. 58, 4. 10, 108, 3. स गोपतिर्निःषिधां नो जनासः 4, 24, 1. सोमं जन्तस्य गोपतिम् 9, 35, 3. 10, 19, 3. मया गात्रो गोपतिना सचधम् AV. 3, 14, 6. त्वां मृत्योर्गोपतिरुद्हरामि 8, 2, 23. 12, 4, 27. 37. 39. VS. 4, 1. — 3) der Hirt xat' ξόκη, Kṛshṇa oder Vishṇu MBH. 13, 7002. 7012. HARIV. 4067. — 4) der Herr der Heerde am Himmel, der Herr der Gestirne oder der Strahlen: a) die Sonne TRIK. H. 97. H. an. MED. MBH. 1, 6615. 2, 425. 3, 16941. 16977. fg. 17119. HARIV. 573. 586. BHĠG. P. 1, 12, 10. — b) Indra H. an. — 5) der Herr der Erde, König H. an. MED. — 6) der Herr der Gewässer, ein Bein. Varuṇa's MBH. 5, 3532. 3801. — 7) als Synonym von Stier N. einer Arzneipflanze (सृषण) RĠĠAN. im ÇKDr. — 8) ein Bein. Çiva's H. an. MED. MBH. 13, 1228. ÇIV. — 9) N. pr. eines Devagandharva (vgl. गो-
 त) MBH. 1, 2550. 4811. — 10) N. pr. eines von Kṛshṇa erschlagenen Dā-
 nava (?) MBH. 3, 492. HARIV. 9141. — 11) N. pr. eines Sohnes des Çivi MBH. 12, 1794. LIA. I, 718. — Vgl. गवांपति.

गोपतिचाप (गोपति Indra + चाप) m. Regenbogen WILS.

गोपत (von गोप) n. *Hirtenstand, Hirtenamt* HARIV. 3160. 3162.

गोपथ (गो + पथ) m. oder गोपथब्राह्मण n. Titel eines zum AV. ge-
 hörigen Brāhmaṇa AV. PARİÇ. in Verz. d. B. H. 92, 28. COLEBR. Misc. Ess. I, 91. fg. WEBER, Lit. 145. fg.

गोपदत्त (गोप + दत्त) oder mit seinen Ehrentiteln: आचार्यभद्रगोपदत्त N. pr. eines buddh. Autors BURN. Intr. 536.

गोपदल (गोप + दल) m. Betelnussbaum TRIK. 2, 4, 40.

गोपन (von गुप्) 1) n. Schutz, Erhaltung: तदाहुः स्वस्य गोपनम् Selbst-
 erhaltung AV. 12, 4, 10. सैन्येन मरुता युक्तं भारद्वाजस्य गोपने MBH. 6, 2230. 13, 1850. — b) das Verbergen, Geheimhalten: आकारं H. 314. VJUTP. 193. — c) das Blatt der Laurus Cassia (तमालपत्र) RĠĠAN. im ÇKDr. — 2) f. गोपनी Schutz, Hut ÇAT. Br. 3, 6, 3, 12. 15. MBH. 12, 11907.

गोपनीय (wie eben) adj. 1) zu hüten: स्वर्गे ऽपि दुर्लभा विद्या गोपनी-
 या प्रपन्नतः NĀPĠPRAKĀÇA im ÇKDr. — 2) zu verhüten, fernzuhalten: गो-
 पनीयमिदं दुःखम् MBH. 12, 5399.

गोपवधू (गोप + वधू) f. 1) Kuhlirtin BHĠG. P. 1, 9, 40. — 2) Ichnocar-
 pus frutescens R. Br. (शारिखा) BHĠVAPR. im ÇKDr. — Vgl. गोपकन्या.

गोपभद्र (गोप + भद्र) 1) n. die Wurzel einer Wasserlilie (शालूक) ÇAB-
 DAČ. im ÇKDr. — 2) f. Gmelina arborea Roxb. (काश्मरी) RĠĠAN. im ÇKDr. Auch गोपभद्रिका f. RATNAM. 1.

गोपाय् (von गोप), गोपायति und ०ते 1) hüten, bewahren. schützen: न-
 कुलः सक्तदेवश्च मातरं गोपायिष्यतः MBH. 1, 6025. (नगरम्) गोपायामास 5, 7463. इमात्रो मित्रावरुणौ गृह्णन्तु गुप्तम् ved. P. 3, 1, 50. Sch. ÇĀṆKH. ÇR. 2, 13, 2, 5. fg. BHĠG. P. 5, 15, 6. ब्रह्मर्षिश्चापि देवाश्च गोपायस्व त्रिपिष्टे MBH. 5, 350. गोपायानो ब्रह्मर्षयम् 13, 5237. अथ भस्मानि गोपायित भक्ष्यम् aufbe-

wahren VARĀH. BRH. S. 88, 16. pass.: वीजं यत्नेन गोपायताम् MBH. 3, 8846.
 गोपायमानः (धर्मः) 2, 2212. गोपायि 1, 5090. 3, 8724. — 2) verstecken, verber-
 gen, geheim halten: (गाः) कस्मिंश्चिद्विले गोपायितवान् SĀJ. zu RV. 1, 11, 5.
 लज्जते बान्धवास्तेन संबन्धं गोपायति च PANĀT. II, 106. न कदाचिदसावा-
 त्मकारणं गोपायितुं शक्नोति KULL. zu M. 10, 59. गोपायि KATHĀS. 14, 68.
 RĠĠA-TAR. 5, 124. — 3) sprechen oder glänzen (vgl. गो Strahl) DHĀTUP. 33, 98. — Vgl. 1. गुप् und गोपाय्.

— अग्निं behüten, bewahren: वज्रो वै स्फोो ब्राह्मणश्चेमं पुरा यज्ञमभ्यन्-
 गुप्तम् ÇAT. Br. 1, 2, 5, 20.

— प्र zu schützen suchen: वत्सवत्तं रिपुं दृष्ट्वा किलात्मानं प्रगोपायेत्
 PANĀT. I, 348. प्रगोपायो चकाराशु यत्नेन परितः पुरम् BHĀTT. 14, 87.

गोपायैत्य् (von गोपाय्) adj. zu behüten NIR. 5, 1. RV. 8, 25, 13.

गोपरस (गोप + रस) m. Myrrhe H. 1063. ÇABDAR. im ÇKDr. — Vgl. गोप 9. und रस.

गोपराष्ट्र (गोप + राष्ट्र) m. pl. N. pr. eines Volkes MBH. 6, 351. VP. 188.

गोपरीणस् (गो + प०) adj. reichlich mit Rindern (Milch) versehen: इह
 त्वा गोपरीणसा मूढे मंदतु राधमे RV. 8, 45, 24. उत दासा परिविष्ये स्मर्दि-
 ष्टी गोपरीणसा । यडेस्तुर्वधं मामहे 10, 62, 10.

गोपर्वन (गोप + वन) m. N. pr. eines Rishi P. 2, 4, 67. aus Atri's Ge-
 schlechte RV. 8, 63, 11. KĀTJ. ÇR. 10, 2, 21. Ind. St. 1, 215. WEBER, Lit. 236. — Vgl. गोपवन.

गोपवल्ली (गोप + व०) f. Ichnocarpus frutescens R. Br. (अनन्ता) RAT-
 NAM. 26. SUCR. 2, 499, 8. Sansevieria zeylanica Roxb. (मूर्त्ता) RĠĠAN. im ÇKDr.

गोपघ्न (गो + पघ्न) m. Opferrind ÇĀṆKH. GRHJ. 2, 15. 3, 15.

गोपौ (गो + पा) m. (auch f. AV. 12, 1, 57. TB. 3, 1, 2, 7) sg. गोपास्,
 गोपाय्; du. गोपौ und गोपा; pl. गोपास्, गोपाभिस् (Vop. 3, 78, 42). Hirt,
 Hüter, Wächter NIR. 7, 9. इतो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः RV. 1, 164, 21. 2.
 23, 6. TAITT. Br. 3, 1, 1, 14. KHĀND. UP. 4, 3, 6. ÇVETĀÇV. UP. 3, 2. गोपाः सृ-
 तस्य RV. 3, 10, 2. क आसतो वचसः सति गोपाः 5, 12, 4. 6, 9, 3. अर्द्धेभिस्तव
 गोपाभिर्निष्ठे ऽस्माकं पाहि 8, 7. VS. 16, 7. AV. 7, 33, 2. वृजनस्य गोपाय्
 RV. 1, 91, 21. — Vgl. गोप, देवगोपा, वात०, वायु०, सक्त०, सु०, सोम०.

गोपात्रिह्व (गोपा + त्रिह्व) adj. der die Zunge d. i. die Stimme eines
 Hirten hat; nach SĀJ. auf Indra zu beziehen: गोपात्रिह्वस्य तस्युपो
 विह्वो विश्वे पश्यन्ति मायिनः कृतानि RV. 3, 38, 9.

गोपाटविक (गो + पा०) m. Kuhlirt WILS. Ist viell. in गोप + आटविक
 Kuhlirt und Waldbewohner zu zerlegen.

गोपादित्य (गोप + आदित्य) m. N. pr. eines Königs von Kaçmirā
 RĠĠA-TAR. 1, 341. LIA. I, 711.

गोपाध्यत (गोप + अध्यत) m. Oberhirt MBH. 4, 1155.

गोपानसी (गोप + अन्स) f. eine ausgehöhlte Dachfette AK. 2, 2, 14. H.
 1009. VJUTP. 137.

गोपाय् (von गोपा), गोपायति DHĀTUP. 11, 1. P. 3, 1, 28. 34. Vop. 8, 64.
 अगोपायीत् 65. 1) behüten, bewachen, bewahren RV. 6, 74, 4. कवयो न
 गोपायन्ति सूर्यम् 10, 134, 5. VS. 3, 34. गोपायंश्च जगत्विश्व रत्नताम् AV. 8.
 1, 13, 14. 5, 9, 8. तं संवत्सरं गोपायेत् TB. 4, 1, 9, 7. एता मा देवता आर्ते-
 गोपायन्तु ÇAT. Br. 1, 5, 1, 22. 2, 2, 2, 3, 6, 2, 14. 14, 6, 1, 11. गोपाय नो वी-
 वसे ÇĀṆKH. ÇR. 3, 5, 10. पशून् सर्वान्गोपाय 13, 2, 2. ĀÇV. GRHJ. 1, 20. श्रुतं
 मे गोपाय TAITT. UP. 1, 4, 1. गोपायति प्रजाः MBH. 6, 472. BHĠG. P. 1, 13,